जिनके नाम इस प्रकार है - शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायनो एवं माण्डूकायन। इन पाँचों शाखाओं में से आजकल प्रचलित ऋग्वेद संहिता शाकल शाखा की है, प्राय: सिद्धान्त तो यह है कि किसी वेद की जितनी शाखाएँ होगी उतने ही ब्राम्हण ग्रंथ, आरण्यक ग्रंथ व उपनिषद होंगे, परन्तु इस समय वैदिक साहित्य का अधिकांश भाग लुप्त हो गया है। इसलिए समस्त साहित्य के उपलब्ध न होने के कारण यह क्रम नहीं रहा। ऋग्वेद के केवल दो ब्राम्हण ग्रंथ, एतरेक ब्राम्हण ग्रंथ तथा कौस्तिकी ब्राम्हण ग्रंथ, दो आरण्यक - एतेक आरण्यक व कौस्तिकी आरण्यक, तथा दो उपनिषद - एतरेक उपनिषद व कौस्तिकी उपनिषद ही प्राप्त होते हैं।

• <u>ऋग्वेद की विषय वस्तु</u> - विभिन्न देवो की स्तुतिपरक मंत्रो का संकलन ऋग्वेद मे है। इस दृष्टि से ऋग्वेद का प्रतिपाद देवस्तुति है। ऋग्वेद में सर्वत्र इसी की प्रधानता भी है किन्तु स्थान - स्थान पर ऋग्वेद में अन्य विषय भी प्राप्त होते हैं। इस दृष्टि से ऋग्वेद का दशम मण्डल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जिसने ऋग्वेद के प्रतिपाद्य विषय को विविधता प्रदान की। यास्क ने ऋग्वेद की सम्पूर्ण विषयवस्तु को प्रत्यक्षकृत, परोक्षकृत और आध्यात्मिक इन पाँच भागो मे विभाजित किया था। इसी को आधार बनाकर घाटे महोदय ने ऋग्वेद के सम्पूर्ण वर्ण्य विषय का धर्मनिरपेक्ष, धार्मिक तथा दार्शनिक सूक्तों की दृष्टि से विभाजन किया। प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान डॉ॰ विण्टर नित्स ने बहुत कुछ मैक्डॉनल की विचार सारणी का अनुसरण करते हुए ऋग्वेद की विषयवस्तु का विश्लेषण

किया और समस्त ऋग्वैदिक सूक्तो को काव्यात्मक गीत, स्तुति, दार्शनिक सूक्त, संवाद सूक्त, धर्मनिरपेक्ष सूक्त, ऐन्द्रजालिक मंत्र तथा दानस्तुति आदि के रूप मे विभाजित किया। किन्तु अनेक अन्य विद्वानों ने प्रतिपाद्य की दृष्टि से ऋग्वेद के सूक्तों को चार श्रेणियों में ही समाहित कर दिया है जो उचित ही जान पड़ता है—

(1) धार्मिक सूक्त, (2) दार्शनिक सूक्त, (3) लौकिक सूक्त एवं (4) संवाद सूक्त

(1) <u>धार्मिक सूक्त</u>— ऋग्वेद का अधिकांश भाग धार्मिक सूक्तों की श्रेणी में आता है। इन सूक्तो में विभिन्न देवो की स्तुति की गई है। अग्नि, इन्द्र, मरुत, आश्विनौ, वरुण, विष्णु आदि ऋग्वेद के प्रमुख देवता है जिनके स्तुतिपरक मंत्रो की संख्या अधिक है। इनके अतिरिक्त विश्वेदेवा, मित्रावरुण, पूषन, उषस्, रुद्र, सोम, वायु, पर्जन्य, पृथ्वी, आदित्य, सरस्वती, प्रजापति आदि देवो की स्तुति के मंत्र ऋग्वेद मे प्राप्त होते है। इनमें से प्रमुख सभी देव विभिन्न प्राकृतिक शक्तियो के मूर्त रूप है किन्तु उनका वर्णन उनके व्यक्ति रूप मे किया गया है। सभी मंत्रो मे इन विभिन्न देवो की स्तुति के साथ-साथ उनके स्वरूप, कार्यो, पारस्परिक सम्बन्ध आदि का भी सुन्दर वर्णन हुआ है। सभी देवो मे सामान्य रूप से तेज, पार्थिवता, दया, वैदुष्य, हितकारिता आदि विशेषताएँ पाई जाती है किन्तु कतिपय व्यक्तिगत विशिष्टताएँ भी है। इन सभी देवो का चरित्र उच्च कोटि का है। वे न्यायप्रिय, सत्यनिष्ठ एवं कर्तव्यरत है। <u>इनमें भी वरुण सबसे अधिक न्यायपालक चित्रित हुआ है</u> जो ऋत के उल्लंघन को कदापि क्षमा नही करता।

यास्क ने निरुक्त के दैवत काण्ड (अध्याय 7 से 12) में समस्त वैदिक देवताओ को

तीन भागो मे विभक्त किया है और उन तीनों विभागो मे एक एक देवता प्रमुख स्थान दिया है। पृथिवीस्थानीय देव अग्नि है, अन्तरिक्षस्थानीय देव वायु या इन्द्र है तथा द्युस्थानीय देव सूर्य है। प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान् प्रो० मैक्डॉनल ने भी वैदिक देवो पर विस्तृत विवेचन किया, एवं सभी देवो को आठ भागो में विभक्त किया -

1) द्युस्थानीय देवता - द्यौः, वरुण, मित्र, सूर्य, सावित्र, पूषन्, विष्णु, विवस्वत्, आदित्यगण, उषस्, अश्विनौ।
2) अन्तरिक्षस्थानीय देवता - इन्द्र, अपांनपात्, मातरिश्वन्, आहिर्बुध्न्य, अजएकपात्, रुद्र, मरुद्गण, वायु, पर्जन्य, आपः।
3) पार्थिवस्थानीय देवता - पृथ्वी, अग्नि, बृहस्पति, सोम, नदियाँ।
4) अमूर्त देवता - प्रजापति, विश्वकर्मा, त्वष्टा, मन्यु, अदिति, श्रद्धा।
5) देवियाँ - उषस्, वाक्, सरस्वती, रात्रि।
6) युगलदेव - इन्द्राग्नी, इन्द्राविष्णु, मित्रावरुणौ, अग्नीषोमौ।
7) देवगण - रुद्राः, आदित्याः, विश्वेदेवाः, वसवः।
8) अवर देवता - गन्धर्व, अप्सरस्, ऋभुगण।

(2) दार्शनिक सूक्त - दार्शनिक तत्व विवेचन सम्बन्धी सूक्त अपेक्षाकृत अर्वाचीन दशम मण्डल मे अधिकांशतः उपलब्ध होते है। ऐसे दार्शनिक सूक्तो मे नासदीय सूक्त, पुरुष सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त तथा वाक् सूक्त अपनी नवीन कल्पना व दार्शनिक गंभीरता के कारण विद्वज्जगत् में नितान्त प्रसिद्ध एवं प्रिय रहे है। यहा इन सूक्तो का अत्याधिक विवेचन अप्रासङ्गिक न होगा।

नासदीय सूक्त जगत् की प्रारम्भिक स्थिति का वर्णन करता है। ऋषि (10/129) कहता है- "सृष्टि के प्रारंभ मे न असत् था, और न ही सत्; न तो दिन था न ही रात; सृष्टि का आविर्भाव

कोई भी चिन्ह नहीं था। सर्वप्रथम "काम" की उत्पत्ति हुई। इसी काम की अभिव्यक्ति सृष्टि के विभिन्न स्तरों मे प्रतिफलित होती है। उस वक्त अपनी स्वाभाविक शक्ति से जीवित एक ही तत्व था जो बिना वायु के भी साँस लेता था। उस तत्व के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। वस्तुत: यह सूक्त भारतीय आर्ष दृष्टि के अपूर्व दार्शनिक चिन्तन का अद्भुत परिचायक है। अद्वैत तत्व की प्रतिष्ठा ही इस सूक्त का गंभीर रहस्य है।

हिरण्यगर्भ सूक्त (10/121) में एक प्रमुख देव की महाविकल्पना बहुमूल दिखाई देती है। यहाँ प्रमुख देव पुरुष प्रजापति था हिरण्यगर्भ नाम से स्तुत है। हिरण्यगर्भ सृष्टि के आदि मे विद्यमान, समस्त विश्व का धारणकर्ता तथा रक्षक, समग्र भूतो का शासक राजा तथा मृत्यु का भी शासनकर्ता है। इस सूक्त के अधिकांस मंत्रो का अन्तिम चरण है— "कस्मै देवाय हविषा विधेम"

पुरुष सूक्त (10/90) दार्शनिक सूक्तों मे अन्यतम माना जाता है। जगत के दुर्बोध्य रहस्य को समझने में तत्पर भारतीय मनीषा की रहस्यभेदनी तीव्र अन्तरदृष्टि इस पुरुष मे अपनी समस्त गंभीरता और गौरव के साथ उदित हुई। वह पुरुष त्रिकाल में भी व्याप्त है। वह त्रिकाल भी है और उससे परे भी है। इसी पुरुष सूक्त मे वर्णोत्पत्ति से सम्बंधित मंत्र भी है। इस प्रकार से यह पुरुष सूक्त दार्शनिक चिन्तन के साथ ही साथ वैदिक आर्यो की सामाजिक तथा आध्यात्मिक धारणाओं का भी परिचायक है।

3) **लौकिक सूक्त—** ऋग्वेद के जिन सूक्तों मे न तो सृष्टिविचार ही है और न ही विभिन्न देवताओ को सम्बोधित

Scanned with CamScanner

किया गया है, अपितु जो सूक्त लौकिक जीवन तथा दैनन्दिन व्यवहार से सम्बद्ध विषयो का रोचक वर्णन करते है, उन सूक्तो को विद्वानों ने लौकिक सूक्त की संज्ञा प्रदान की है। ऐसे विषय अधिकांशतया अर्थववेद की अपनी विशेषता माने जाते हैं किन्तु ऋग्वेद में भी ऐसे कतिपय सूक्त उपलब्ध हैं। दार्शनिक सुक्तों की भाँति ये लौकिक सूक्त भी दशम मण्डल मे ही हैं।

विवाह के सुन्दर कवित्वमय विधि से सम्बद्ध सूक्त (10/85), राजा की प्रशस्ति (10/734-174), व्यक्ति के दुर्गामी मन को लौट आने की प्रार्थना (सपत्नघ्न सूक्त 10/166), रोगपीड़ित मनुष्य की व्याधिहरण का उपाय (10/161), औषधियुक्त (10/97), मण्डूकसूक्त (7/103), आदि सूक्त लौकिक विषयो से संबन्धित ही हैं।

(4) संवाद सूक्त — ऋग्वेद के कतिपय सूक्तो मे कथोपकथन की प्रधानता के कारण उन्हे संवाद सूक्त का नाम दिया है। ये सूक्त संख्या मे लगभग 20 है और ऋग्वेद को प्रबन्धको और नाटको से जोड़ देते हैं। इन संवाद सूक्तो को लेकर पाश्चात्य विद्वानो में गहरा मतभेद रहा है।

ये संवाद सूक्त ऋग्वेद के प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि मण्डलो में भी प्राप्त हैं किन्तु दशम मण्डल में इनकी संख्या अधिक है। इन्द्र मरुत् संवाद (1/165, 1/170), अगस्त्य लोपामुद्रा संवाद (1/179), विश्वामित्र नदी संवाद (3/33) आदि संवाद सूक्तो के अतिरिक्त अन्य कुछ संवाद सूक्त अधिक प्रसिद्ध हैं।

Scanned with CamScanner